Meyer Fortes — 1906 – 1983

Books –

1. Kinship and the Social Order – (1969)
2. Time and Social Structure (1970)
3. Marriage in Tribal Societies (1962)
4. The Dynamics of Clanship among The Tallensi (1945)
5. The web of Kinship among The Tallensi (1949)

Scanned with CamScanner

पद्धति व लेतेहैं   Meyer Fortes   UNIT-III

Long

Concept of Social Structure & Time

समय एंव सामाजिक संरचना की अवधारणा

उन्होंने रॉड क्लिफ ब्राउन का संरचना एंव संरचनात्मक स्वरूप के विचार की आलोचना की और कहा- दोनों एक ही है और वो है वास्तविकता। एक निरंतर सा० संरचना समय के साथ एक स० प्रक्रिया है। ज्यादातर वैज्ञानिकों ने समय की विचार द्वारा को संरचना के विश्लेषण को ध्यान में नहीं रखा इसलिए समस्या उत्पन्न हुई क्योंकि संरचना समयानुसार होता है। वो Mayer Fortes पहला समाज शास्त्री है जिसने समय को ध्यान में रखा। उन्होंने तत्कर की समय के बारे में धारणा दिया -

1. अवधि का समय - Duration Time

से एक वाह्य कारक है उसका सा० संरचना या सा० घटनाओं में कोई प्रभाव नहीं है जैसे कि - कोई पूजा, त्यौहार या कोई सामाजिक समारोह। ये अपने समय पर आता है और उसको मनाया जाता है। समय से पहले या समय के बाद नहीं आता। जैसे - बकरीद, होली।

2. निरन्तरता का समय - Continuity Time

से आंतरिक कारक है। जैसे - जनजातियों में वंश का मुखिया होता है उसकी मृत्यु के बाद उसका

Scanned with CamScanner

इस प्रक्रिया होता है वही सिद्धांत परि-वार के प्रक्रिया के लिए लागू होता है। प्रक्रिया का परिवर्तन होने के बाद उस समूह के सिद्धांत में बहुत ज्यादा बदलाव नहीं होता है। ये समाया-नुसार होता है।

Growth Time

5. आनुवांशिकी या वृद्धिगत प्रक्रिया का समय-

ये निरन्तरता के अन्दर ही परिवर्तन है ये ज्यादातर सरल एवं पारम्परिक समाजों में मिलता है। वृद्धि में क्योंकि ये निरन्तरता में ही परिवर्तन है। वृद्धि ज्यादातर आदिम समाजों में मिलता है। वृद्धि दो स्तर से उत्पन्न हो रहा है—

A. निरन्तरता— ये संरचित कोटिवादी के द्वारा होता है।

B. अपरिवर्तनीय परिवर्तन— इसमें दोबारा परिवर्तन नहीं हो सकता है।

वृद्धि सरल हो सकता है (जनसंख्या का बढ़ना या घटना) जटिल हो सकता है। जैसे कि समा० संरचना में गुणात्मक परिवर्तन।

C. वृद्धि सकारात्मक हो सकता है। उदा० विकास एवं नए आगे

का आना)

नकारात्मक हो सकता है। (अंगो का होना या संकुचित होना)

इस प्रकार समय के अनुसार परिवर्तन होता रहता है। यहाँ पर स्थान भी महत्वपूर्ण है। स्थिति स्थान के

स्थान के अनुसार संस्कृति का निर्माण होता है।

Social Structure
सामाजिक संरचना की परिभाषा —

" सा० संरचना एक निश्चित समग्रता है। एक संस्था, एक सा० समूह, को परिस्थिति या प्रक्रिया हो सकता है। इसका विश्लेषण उपयुक्त प्रत्यय एवं तकनीकियों से हो सकता है इसमें सर्व अंग है जो समय एवं स्थान के अनुसार एक व्यवस्थित ढंग है। "

इसका अर्थ है - एक परिस्थिति में एक अंग और दूसरी परिस्थिति में समग्रता होती है। और एक समग्रता दूसरी परिस्थिति में अंग हो सकता है। अंगो का निश्चित रूप से निकालना ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि संरचनात्मक व्यवस्था का सिद्धान्त निकालना महत्वपूर्ण है। संरचना सामने नहीं दिखता इसको तुलना के द्वारा दिखाया जाता है।

Scanned with CamScanner

स्थिरांक

जब हम संरचना का वर्णन करते हैं। तब हम वास्तविकता से कुछ सिद्धान्तों का अमूर्तीकरण के माध्यम से वर्णन करते हैं, तब उसमें स्थित जटिलता को खत्म करते हैं। व्यवहार, विश्वास भावनाओं से दूर इस सिद्धान्त को उत्पन्न करते हैं।

स्ना० संरचना में अंगों एवं संबंधों का अलग-२ महत्व होता है। कुछ अंग व संबंध निरन्तर पाये जाते हैं। जिनको स्थिरांक कहा जाता है। चर - यही संबंध जो निरंतर होते हैं) कुछ अंगों व संबंधों by chance होते हैं। इसे चर कहते हैं। स्थिरांक तत्वों में क्रम मिलती है। स्थिरांक का अर्थ है - निरन्तरता जबकि चर का अर्थ है - विकास एवं परिवर्तन। उदा० - टॉलेन्सी जनजाति में वंश का विखण्डन होना स्थिरांक है लेकिन किसमें विखण्डन होगा ये चर है। इसी प्रकार अफ्रीका की जनजातियों में वधू मूल्य देने का सिद्धान्त स्थिरांक है। लेकिन कितनी मुद्रा दी जायेगी ये चर है।

स्ना० व्यवहार से २ प्रकार के आंकड़े मिलते हैं —

1. आंकड़ा एक - ये परिमाणात्मक है।
2. आंकड़ा दो - ये गुणात्मक वर्णन है।

— का उदा० - वधू मूल्य,

का परिपालन, वंश में पीढ़ी की गहराई, प्रतिमानों का पालन करना, वर्णात्मक मूल्यों का परिपालन।

आकड़ा देने का उदा०- बहु मूल्य को प्रथा के रूप में देने का उत्तरदायित्व, मातृवंशीयता का स्था० स्वीकृति, अर्द्ध-दोना में विश्वास। सा० संरचना में ये दोनों तत्व आते हैं।

सा० तत्व का गुणात्मक पहलू संस्कृति है जबकि सा० संरचना में जो घटनाएं या सा० संगठन शामिल है जिनका परिमाणात्मक विश्लेषण हो सकता है इसलिए संस्कृति स्थिर है व सा० संरचना चर है। संस्कृति व संरचना एक घटना का अलग-2 रूप है। संस्कृति एवं संरचना का विश्लेषण एवं वर्णन में समय एवं स्थान को ध्यान में रखना चाहिए इसलिए संरचना अंगों का एक व्यवस्थित ढंग है। जिसको एक समय प्रवाह में विश्लेषण करके लायी जाती है जिसमें सा० संगठन जैसे होते हैं, वो भी समाज में लागू होते हैं।

आलोचनात्मक विश्लेषण— Fortes का संरचनात्मक विश्लेषण में संरचना का समग्र परिवर्तन नहीं

पायी जाती है। इसमें आंशिक परिवर्तन मिलता है। इसलिए ये संतुलित विश्लेषण है, गतिशील नहीं। Leach ने संरचना के दो प्रकार के परिवर्तन के बारे में कहा—

1. संरचना में परिवर्तन – ये सम्पूर्ण परिवर्तन नहीं है होता। मोटा परिवर्तन है। इसमें Firth व Fortes शामिल हैं।

2. संरचना का परिवर्तन – ये संरचना का सम्पूर्ण परिवर्तन है और ये संरचना का गतिशील विचार है।

Scanned with CamScanner

Family of Clanship among Taylence प्रमुख हैं।

Fortes का विचार है कि प्रकार्यवादीयों का दृष्टिकोण सदैव संक्षिप्त तथा सुसंगत होना चाहिए जिसका उद्देश्य सामान्य नियमो की खोज होनी चाहिए इन नियमो की खोज इतिहास की सहायता के बिना की जानी चाहिए।

Fortes ने Redcliffe Brown की संरचना तथा सरचनात्मक स्वरूप के सिद्धान्त का खण्डन किया है और कहा है कि सरंचना का निर्माण मानवशास्त्री करता है। इस प्रकार दोनो में अन्तर नही होना चाहिए।

Radcliffe Brown– संरचना (वास्तविकता) / स्वरूप (पुर्ननिर्माण)

Mayer Fortes– स्वरूप (वास्तविकता) / (संरचना) पुर्ननिर्माण

Fortes ने संरचना के विश्लेषण में समय और स्थान को ध्यान में रखा है। फोर्टेस के अनुसार तीन प्रकार का समय होता है।

(1) अवधि का समय **(Duration Time):**

यह एक बाध्य कारक होता है बाहर से समाज पर थोपा जाता है जैसे कोई घटना या त्यौहार जो अपने समय से आता है मनाया जाता है और चला जाता है यह कुछ अवधि के लिये आता है इस लिये इसका सामाजिक संरचना पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

(2) निरन्तरता का समय **(Continuity Time):**

यह आन्तरिक कारक है– उदाहरण वंश के मुखिया की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मुखिय बनता है। लेकिन वह पारम्परिक वशीयता के नियमो में कोई परिवर्तन नही करता । इसके अन्तर्गत अनिरंतरता का समय भी शामिल किया गया है यह मुख्य रूप से वाहय आक्रमण या युद्ध होने पर होता है जिससे संरचना में बदलाव आता है लेकिन अकसर यह देखा गया है कि युद्ध के

Scanned with CamScanner

बाद कुछ समय के लिये लोगो में संक्रामक स्थिति उत्पन्न होती है बाद में वे पुनः अपनी पारम्परिक संरचना में वापस आ जाते है।

(3) आनुवंशिकी या विकास का समय (Growth Time):

विकास अकसर अस्थिर समाजो में पाया जाता है विकास के कई रूप है यह दो स्थितियो से उत्पन्न हो सकता है।

(1) निरंतरता– (सरंक्षित क्षेत्रो के द्वारा)

(2) अपरिवर्तननीय– (परिवर्तन के द्वारा)

(3) विकास सरल हो सकता है– (जनसंख्या में वृद्धि या हास)

(4) विकास जटिल हो सकता है– (सामाजिक संस्थाओं में गुणण्त्मक पाविर्तन)

(5) सकारात्मक विकास– (संरचना के तत्वो में विकास)

(6) नकारात्मक विकास– (अंगो की संरचना में हास होना)

इस प्रकार विकास के इस पहलू द्वारा संरचना में अधिक परिवर्तन नही होता है।

उपरोक्त तथ्यो में संतुलित व्यवस्था अधिक तथा गतिशील व्यवस्था कम पायी जाती है।

सामाजिक संरचना (Social Structure):

सामाजिक संरचना एक विशिष्ट समग्रता है (संस्था, समूह, घटना या एक प्रक्रिया) जिसका विश्लेषण उपर्युक्त प्रत्यय एवं तकनीकी के साथ हो सकता है जो समय तथा स्थान के अनुसार अगों का व्यवस्थित ढंग है, जिसका अर्थ है –

(1) यह एक विशिष्ट समग्रता है।

(2) यहाँ पर इसके कई अंग होते है, क्योकि यह अगों का व्यवस्थित ढंग है।

(3) यहाँ पर अंग और समग्रता के बीच सम्बन्ध स्पष्ट होना चाहिए एक स्थिति में समग्रता दूसरी स्थिति में अंग हो सकता है।

Scanned with CamScanner

(4) समय तथा स्थान के अनुसार सामाजिक संरचना का निर्माण होता है।

संरचना का विश्लेषण (Analysis of Structure):

संरचना का वर्णन अमूर्तकरण से होता है जिसका तात्पर्य व्यवहार, अनुभव एवं भावनाओ का जटिलता से हटकर कुछ सामान्यीकरण निकालना। सामाजिक संरचना में अंग और सम्बन्ध विभिन्न प्रकृति के होते है जिसमें कुछ अंग और सम्बन्ध हमेशा पाए जाते हैं इसे स्थिरांक कहा जाता है कुछ यदा कदा ही पाये जाते है जिसे चर पर कहते है।

उदाहरण– जनजाति में वधूमूल्य देना स्थिराकं तथा उसका परिणाम चर होगा।

मेयर फोर्टेस के अनुसार सामाजिक व्यवहार से दो प्रकार के आंकड़े प्राप्त होते हैं।

(1) **गुणात्मक** – (i) वधुमूल्य अनुष्ठानिक रूप में देना।
(ii) मातृवंशीयता की सामाजिक स्वीकृति।
(iii) चुड़ैल प्रथा में विश्वास।

(2) **परिणात्मक** – (i) वधुमूल्य का परिणाम।
(ii) प्रतिमानो का पालन करना।
(iii) वंश की पीढ़ी की गहराई।

मेयर फोर्टेस के अनुसार सस्कृति सामाजिक तत्त्वो का गुणात्मक पहलू है सामाजिक संरचना के विश्लेषण में इन दोनो पहलूओ का प्रयोग किया जाता है।

आलोचना

समय को ध्यान में रखते हुए फोर्टेस ने एक गतिशील विश्लेषण देने की कोशिश की है जिसमें अनिरन्तरता को छोड़कर अन्य सभी प्रकारों में सन्तुलित व्यवस्था का रूप देखने को मिलता है।

Scanned with CamScanner